Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

तुलनात्मक अध्ययन पद्धति : स्वरूप, विकास, महत्व एवं साहित्यिक अनुसंधान में उपयोगिता

महीपाल दान*

* सहायक आचार्य (हिन्दी) सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा (जिला राजसमंद) (राज.) भारत

शोध सारांश – तुलनात्मक अध्ययन पद्धति आधुनिक अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक पद्धति है, जिसके माध्यम से दो या दो से अधिक साहित्यकारों, कृतियों, भाषाओं, साहित्यिक प्रवृत्तियों अथवा सांस्कृतिक परंपराओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है। यह पद्धति समानताओं एवं भिन्नताओं की खोज के साथ-साथ विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन भी करती है। आधुनिक हिंदी अनुसंधान में तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का विशेष महत्व है क्योंकि इसके माध्यम से साहित्य की व्यापकता, सार्वभौमिकता और अंतर्सांस्कृतिक संबंधों को समझा जा सकता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में तुलनात्मक अध्ययन पद्धति के स्वरूप, विकास, सिद्धांत, विशेषताओं, महत्व, सीमाओं तथा साहित्यिक अनुसंधान में उसकी उपयोगिता का विवेचन किया गया है।

शब्द कुंजी – तुलनात्मक अध्ययन, तुलनात्मक साहित्य, अनुसंधान पद्धति, साहित्यिक तुलना, शोध-विधि।

प्रस्तावना – मानव स्वभावत: तुलना करने वाला प्राणी है। वह किसी वस्तु, व्यक्ति, विचार अथवा घटना का मूल्यांकन प्राय: किसी अन्य वस्तु या विचार से तुलना करके करता है। यही प्रवृत्ति आगे चलकर वैज्ञानिक अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण पद्धति के रूप में विकसित हुई जिसे तुलनात्मक अध्ययन पद्धति कहा जाता है। साहित्य के क्षेत्र में यह पद्धति विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हुई है क्योंकि इसके माध्यम से विभिन्न भाषाओं, देशों, संस्कृतियों तथा साहित्यिक परंपराओं के बीच संबंधों को समझा जा सकता है।[1]

तुलनात्मक अध्ययन केवल समानताओं की खोज नहीं करता, बल्कि भिन्नताओं के कारणों और उनके प्रभावों का भी विश्लेषण करता है। यही कारण है कि आधुनिक साहित्यिक अनुसंधान में इस पद्धति को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

तुलनात्मक अध्ययन : अर्थ एवं परिभाषा – 'तुलनात्मक' शब्द 'तुलना' से निर्मित है, जिसका अर्थ है-दो या दो से अधिक वस्तुओं का परस्पर मिलान करके उनके गुण-दोष, समानता एवं असमानता का अध्ययन करना।

डॉ. इंद्रनाथ चौधरी के अनुसार- 'तुलनात्मक अध्ययन दो या दो से अधिक साहित्यिक कृतियों, साहित्यकारों अथवा साहित्यिक परंपराओं के पारस्परिक संबंधों और प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन है।'[2]

डॉ. नगेंद्र के अनुसार-'तुलनात्मक साहित्य का उद्देश्य विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के साहित्य में निहित समानताओं एवं विभिन्नताओं का विवेचन करना है।'[3]

इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन पद्धति साहित्यिक तथ्यों के विश्लेषण की एक वैज्ञानिक विधि है जिसके माध्यम से व्यापक निष्कर्ष प्राप्त किए जाते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का विकास- तुलनात्मक अध्ययन की परंपरा प्राचीन काल से विद्यमान रही है। भारतीय साहित्य में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य के पारस्परिक प्रभावों का उल्लेख मिलता है।[4] आधुनिक अर्थों में तुलनात्मक साहित्य का विकास उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस में हुआ। फ्रांसीसी विद्वानों ने विभिन्न राष्ट्रों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रारंभ किया। इसके बाद यह पद्धति यूरोप, अमेरिका तथा एशिया के विभिन्न देशों में लोकप्रिय हुई।[5] भारत में तुलनात्मक साहित्य के विकास का श्रेय मुख्यत: विश्वविद्यालयों और आधुनिक साहित्यिक आलोचना को जाता है। हिंदी, बांग्ला, मराठी, गुजराती तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन व्यापक रूप से किया जाने लगा।[6]

तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का स्वरूप – तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का स्वरूप बहुआयामी है। इसके प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं-

(क) समानता का अध्ययन- इसमें दो साहित्यकारों या कृतियों के बीच समान तत्वों का विश्लेषण किया जाता है।

(ख) भिन्नता का अध्ययन – तुलना का उद्देश्य केवल समानता खोजना नहीं बल्कि भिन्नताओं को समझना भी है।

(ग) प्रभाव-अध्ययन – एक साहित्यकार या साहित्यिक परंपरा का दूसरे पर क्या प्रभाव पड़ा, इसका अध्ययन किया जाता है।

(घ) सांस्कृतिक अध्ययन- तुलनात्मक पद्धति विभिन्न संस्कृतियों के साहित्यिक संबंधों को समझने में सहायक होती है।

(ङ) अंतर्विषयी अध्ययन- यह पद्धति साहित्य को इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन तथा संस्कृति से जोड़ती है।[7]

तुलनात्मक अध्ययन के प्रमुख सिद्धांत

1. **तुलनीयता का सिद्धांत-** तुलना उन्हीं विषयों की की जानी चाहिए जिनमें किसी प्रकार की समानता या संबंध विद्यमान हो।[8]
2. **निष्पक्षता का सिद्धांत-** शोधकर्ता को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर अध्ययन

करना चाहिए।

3. वैज्ञानिकता का सिद्धांत – तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाने चाहिए।

4. वस्तुनिष्ठता का सिद्धांत – अध्ययन में व्यक्तिगत रुचि अथवा पक्षपात का प्रभाव नहीं होना चाहिए।

5. समग्रता का सिद्धांत – तुलना केवल किसी एक पक्ष तक सीमित न रहकर समग्र अध्ययन पर आधारित होनी चाहिए।[9]

6. साहित्यिक अनुसंधान में तुलनात्मक अध्ययन पद्धति– साहित्यिक अनुसंधान में तुलनात्मक अध्ययन निम्न क्षेत्रों में किया जाता है:

1. दो साहित्यकारों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. दो कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. दो साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन।
4. दो भाषाओं के साहित्य का अध्ययन।
5. भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन।
6. सांस्कृतिक एवं वैचारिक प्रभावों का अध्ययन।[10]

उदाहरण के लिए:

1. जैनेंद्र कुमार और अज्ञेय की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. प्रेमचंद और शरतचंद्र के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. हिंदी और बांग्ला कहानी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।

तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का महत्व – तुलनात्मक अध्ययन पद्धति के अनेक लाभ हैं:

1. साहित्य की व्यापक समझ विकसित होती है।
2. विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित होता है।
3. साहित्यिक प्रभावों की पहचान होती है।
4. अनुसंधान अधिक वैज्ञानिक और प्रमाणिक बनता है।
5. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक संबंधों का ज्ञान प्राप्त होता है।
6. साहित्य की सार्वभौमिकता का बोध होता है।[11]

तुलनात्मक अध्ययन पद्धति की सीमाएँ – यद्यपि यह पद्धति अत्यंत उपयोगी है, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं:

1. उचित तुलनीय विषय का चयन कठिन होता है।
2. विभिन्न भाषाओं के ज्ञान की आवश्यकता होती है।
3. निष्पक्षता बनाए रखना कठिन हो सकता है।
4. सांस्कृतिक संदर्भों के अंतर के कारण निष्कर्ष प्रभावित हो सकते हैं।[13]

आधुनिक हिंदी अनुसंधान में तुलनात्मक अध्ययन की प्रासंगिकता– वर्तमान वैश्वीकरण के युग में तुलनात्मक अध्ययन का महत्व और अधिक बढ़ गया है। आज साहित्य केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है। विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच निरंतर संवाद हो रहा है। ऐसे में तुलनात्मक अध्ययन पद्धति साहित्य की नई व्याख्याओं और शोध की संभावनाओं को विस्तृत करती है।[14]

उपसंहार – तुलनात्मक अध्ययन पद्धति आधुनिक साहित्यिक अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण और वैज्ञानिक पद्धति है। यह विभिन्न साहित्यिक कृतियों, साहित्यकारों और सांस्कृतिक परंपराओं के बीच संबंधों को स्पष्ट करती है। इसके माध्यम से साहित्य की व्यापकता, विविधता और सार्वभौमिकता का ज्ञान प्राप्त होता है। हिंदी साहित्य के अनुसंधान में यह पद्धति विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हुई है क्योंकि इसके माध्यम से न केवल साहित्यिक समानताओं और भिन्नताओं का अध्ययन किया जा सकता है, बल्कि विभिन्न सांस्कृतिक और वैचारिक प्रभावों का भी विश्लेषण संभव होता है। अत: आधुनिक शोध कार्यों में तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का महत्व अत्यंत व्यापक और स्थायी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. इंद्रनाथ चौधरी, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1998, पृ. 12.
2. वही, पृ. 18.
3. डॉ. नगेंद्र, तुलनात्मक साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1993, पृ. 25.
4. डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित, तुलनात्मक साहित्य और अनुसंधान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 31.
5. Henry H. H. Remak, Comparative Literature: Method and Perspective, Southern Illinois University Press, Illinois, 1971, p. 3.
6. डॉ. इंद्रनाथ चौधरी, तुलनात्मक साहित्य : सिद्धांत और समीक्षा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृ. 44.
7. डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित, तुलनात्मक साहित्य और अनुसंधान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 56.
8. डॉ. नगेंद्र, तुलनात्मक साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1993, पृ. 47.
9. डॉ. इंद्रनाथ चौधरी, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1998, पृ. 62.
10. डॉ. रामचंद्र तिवारी, हिंदी आलोचना रू शिखरों का साक्षात्कार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2016, पृ. 143.
11. डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित, तुलनात्मक साहित्य और अनुसंधान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 88.
12. डॉ. नगेंद्र, तुलनात्मक साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1993, पृ. 94.
13. डॉ. इंद्रनाथ चौधरी, तुलनात्मक साहित्य : सिद्धांत और समीक्षा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृ. 119.

****